श्री सत्यात्मतीर्थ
विरचिता
विष्णुपादस्तुतिः

॥ श्रीः॥

॥ श्रीदिग्विजयरामो विजयते ॥

श्रीमत्सत्यात्मतीर्थविरचिता

विष्णुपादस्तुतिः

यदीयमाश्रितं पदं समस्तपापनाशकम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 1 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तविघ्ननाशकम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 2 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तदुःखनाशकम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 3 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तपुण्यदायकम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 4 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तसौख्यदायकम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 5 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तभाग्यदायकम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 6 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तशास्त्रबोधनम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 7 ॥

Rarest Archiver

यदीयमाश्रितं पदं समस्तकर्मसिद्धिदम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 8 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तदेवतोषदम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 9 ॥

यदीयमाश्रितं पदं समस्तसद्विमुक्तिदम् ।

स विष्णुरात्मसत्पदे सुभक्तिमाशु मे दिशेत् ॥ 10 ॥

यतिः सत्यात्मपदभाक् अभवद्विष्णुपादभाक् ।

तदुक्तपदभाग् यस्तु स भवेद्विष्णुपादभाक् ॥ ॥

॥ इति श्रीमदुत्तरादिमठाधीशैः श्रीमत्सत्यात्मतीर्थैः विरचिता विष्णुपादस्तुतिः ॥

Rarest Archiver

स्तुति कर्तारः

उत्तरादिमठाधीशाः
श्री सत्यात्मतीर्थाः